एकोद्दिष्टश्राद्धपद्धतिः

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

॥ श्रीः ॥

श्रीशुक्लयजुर्वेदीयमाध्यंदिनवाजसने-
यिगौडानामनुकल्पोक्ता

एकोद्दिष्टश्राद्धपद्धतिः ।

श्रीरत्नगढनगरनिवासिना पंडितश्रीकस्तूरीचन्द्रा-
त्मजगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मविरचितश्राद्धप्र-
काशपद्धतिखंडान्तर्गता.

पुनस्तेनैव विदुषा विरचितया
भाषाटीकया सहिता ।

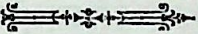

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराजा श्रीकृष्णदासः,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४००.००४.

संस्करण : दिसंबर २०१५, सवंत् २०७२

मूल्य : २५ रुपये मात्र

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

श्रीगणेशाय नमः

अथ एकोद्दिष्टश्राद्धपद्धतिः

भाषाटीकासहिता

तत्रतावत्पूर्वेद्युर्निरामिषमेकवारंभुक्त्वातद्दि-
नेरात्रौप्रदोषान्तेविप्रनिमंत्रणंकृत्वाश्राद्धदिने
प्रातःश्वेतवस्त्रयुगलेनस्नात्वानित्यावश्यकंस-
माप्य पाकभूमिंगोमयादिनासंस्कृत्य तत्रनू-
तनपात्रेषुयथाशक्त्युत्कृष्टमन्ननानाप्रकारंसर्पिं-
डस्त्रीद्वारापाचयेत् स्वयंवापचेत् ततः श्रा-
द्धभूमिंगोमयोदकेनोपलिप्यज्वलदंगारैः सं-
शोध्य गौरमृत्तिकयाऽऽच्छाद्यतिलैर्गौरसर्षपै-
श्चविकीर्यवस्त्रादिनावेष्टयित्वा तत्रश्राद्धसाम-
ग्रींसंपादयेत् ॥ ततोमध्याह्नेपुनःस्नात्वा
शुक्लवाससीद्वेपरिधायश्राद्धभूमिमागत्याऽन्ना-
भिप्रायेणसिद्धमित्यभिधाय आसनसमीपेति

लतैलेनदीपंप्रज्वाल्यस्थापयेत्दीपरक्षाद्विजेन कार्या काककुक्कुटादीञ्छ्राद्धापहंतृनपसारयेत् ।

भाषाभावार्थ—प्रथम श्राद्धके पहलेदिन (निरामिष) मांस आदि निषिद्ध वस्तु त्यागके उत्तम हविष्यान्नका एकवक्त भोजन करै फिर रात्रिमें ब्राह्मणोंको न्योंता देके श्राद्धके प्रातःकाल सपेद धोती, अंगोछा लेके स्नान करै और संध्याआदि नित्यकर्म समाप्ति करके पाकभूमिको गोमय, मिट्टी जलद्वारा शुद्ध करै फिर तहां नवीन शुद्ध पात्रोंमें शक्तिमुजब अच्छे अन्न नाना तरहके भाई, बांधव, स्त्री आदिके द्वारा करावै अथवा खुद यजमान करै, पश्चात् श्राद्धकरनेकी भूमिपै गोमय जल आदिका लेप लगावै और जलता हुया तृण लेके फेरै, फिर, बारीक साफ बालुका या मिट्टी बिछाके तिल सरसोंका विकिरण करै । और वस्त्र आदिसे वेष्टन करके तहां श्राद्धसामग्री संपूर्ण स्थापन करदेवै । फिर मध्याह्नमें अर्थात् ग्यारह बजेके

अनंतर स्नान करके सुपेदवस्त्र पहिरै और श्राद्ध-स्थानमें आके आसनके समीप तिलोंके तेलसे भरा हुआ दीप जलाके ब्राह्मणके द्वारा दीपककी वायु आदिसे रक्षा करै और काग, मुर्गा,कुत्ता,चील,सूअर, मार्जार आदि निषिद्ध जानवरोंको दूर हटा देवै, कारण यह जानवर श्राद्धको नाश करते हैं ॥

ततःकर्तास्वासनेप्राङ्मुखउपविश्यसव्येना-ऽऽचम्य ॐ अपवित्रः पवित्रोवासर्वावस्थां गतोपिवा ॥ यःस्मरेत्पुंडरीकाक्षंसबाह्याभ्य-न्तरःशुचिः॥ १॥ ॐपुण्डरीकाक्षः पुनात्वि-तिपठित्वाकुशत्रयानीतजलेनश्राद्धदेयद्रव्या-णिस्वात्मानंचसिंचेत् । ततः ॐवैष्णव्यैन-मः ॐकाश्यप्यैनमः ॐ अक्षय्यायै नमः ॐ भूम्यैनमः इतिनत्वाॐभगवत्यैगयायैनमः ॐभगवतेगदाधरायनमः । इतिमनोवाक्कायै-र्नमस्कारंकुर्यात् । ततः कुशत्रयतिलजला

न्यादायदेशकालौसंकीर्त्य ॐ अद्यामुकगोत्रस्यास्मत्पितुरमुकशर्मणः सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धमहं करिष्ये । इतिसंकल्प्य (कुरुष्वेत्यनुज्ञातः) गायत्रीं त्रिर्जपित्वा । ॐ देवताभ्यःपितृभ्यश्चमहायोगिभ्यएवच। नमःस्वाहायैस्वधायैनित्यमेवनमोनम इति त्रिर्जपेत् । ततोऽपसव्यंकृत्वादक्षिणामुखःपातितवामजानुःतिलगौरसर्षपान्गृहीत्वा

भषाभावार्थ—पश्चात् श्राद्धकरनेवाला आसनपें पूर्वको मुख करके बैठे, सव्य होके पवित्र धारण करके आचमन करै, फिर (अपवित्र) इस श्लोकको पढके पुंडरीकाक्षका स्मरण करता हुआ दर्भोंके द्वारा जलकरके श्राद्धसामग्रीको तथा अपने शरीरको पवित्र करै। पश्चात् (वैष्णव्यै) इत्यादि नामोंसे भूमिको नमस्कार करके गया और गदाधर भगवान्को मनवाणीकाय करके नमस्कार करै । फिर तांबेके पात्र आदिमें त्रिकुश,तिल,जल, चंदन,पुष्प, आदि लेके संवत्, ऋतु,

मास, पक्ष, तिथि,वार आदिका उच्चारण करके अपने पिताका गोत्र तथा नाम उच्चारण करै और कहै कि अमुक गोत्र अमुकनामवाले मेरे पिताजीका सांवत्सरिकश्राद्ध करताहूं ऐसे कहके पात्रका जल आदि भूमिपै त्याग देवै, फिर ब्राह्मणकी आज्ञा लेके तीन बेर ब्रह्मगायत्रीका तथा (देवताभ्यः) इत्यादि मंत्रका जप करै पश्चात् अपसव्य होके तिल और सुपेद सरसों बायें हाथमें धारण करै और ॥

ॐ नमोनमस्तेगोविंदपुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धंहृषीकेशरक्षतांसर्वतोदिशः॥ इतिपठित्वा ॐअग्निष्वात्ताः पितृगणाःप्राचींरक्षन्तुमेदिश मातथाबर्हिषदः पान्तुयाम्यांयेपितरःस्थिताः ॥ १ ॥ प्रतीचीमाज्यपास्तद्वदुदीचीमपिसोमपाः । अधोर्ध्वमपिकोणेषु हविष्मन्तश्च संव्वर्तः ॥ २ ॥ रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः ॥ सर्व्वतश्चाधिपस्तेषांयमोरक्षांकरोतुवै ॥ ३ ॥ वायुभूतपितॄणांचतृप्तिर्भवतु

शाश्वती॥ इत्यनेनपूर्वादिदिक्षुअधस्तादूर्ध्व-कोणेषुचसर्वत्रतिलान्गौरसर्षपांश्च विकीर्य्य वामेदक्षिणेवाकटिभागेनीवीबंधंकुर्यात् ।ततः सव्येनकरेंमश्चित्पात्रेजलंगृहीत्वादर्भैरालो-ड्य।ॐयद्देवादेवहेडनमित्यादिकूष्माण्डसूक्ते-नाभिमन्त्र्य । उदक्यादिदृष्टिपातात् शूद्रादि संपर्कदोषाच्चपाकादीनांपवित्रताऽस्तुइतिपा-कादीन्संप्रोक्ष्य हस्तेनिवेदयेत्।ततोऽपसव्यं-कृत्वाद्विगुणभुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादायॐ अद्यामुकगोत्रअस्मत्पितरमुकशर्मन्निदमासनं तुभ्यंस्वधा । इत्युच्चार्य्यपितृतीर्थेनमोटकरू-पदक्षिणाग्रकुशत्रयात्मकमासनमुत्सृजेत् ।

भाषाभावार्थ–(नमोनमस्ते) (अग्निष्वात्ताः पितृगणाः) इत्यादि मंत्रोंकरके पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशाओंमें तथा चारों कोण और नीचे तथा ऊपरको सारे विकिरण करै तिल दर्भा लेके वाम

या दक्षिण पार्श्वके कटिवस्त्रमें धारण करै इसको नीवी-बन्धन कहते हैं। पश्चात् सव्य होके ताँबेआदिके पात्रमें जल डाले और उस पाणीको दर्भाकरके आलोडन अर्थात् हिलावै और (यद्देवादेवहेडनम्) इत्यादि तीन मंत्रों करके अभिमंत्रण करै फिर रजस्वला श्वान आदिकी दृष्टिसे तथा शूद्रआदिके स्पर्शसे पाककी अशुद्धि दूर करनेके लिये उसी जलका दर्भासे अन्न आदि सामग्रीका प्रोक्षण करै, पश्चात् अपसव्य, दक्षिण मुख, पातितवामजानु करके बीचसे दुगुणी और बंटी हुई त्रिकुशा तिलजलसहित लेवै फिर अपने पिताका गोत्रनाम उच्चारण करके पितृतीर्थसे आसनके अर्थ दक्षिणको अग्रभाग करके पिताके अर्थ देदेवै और संकल्पका जल वेदीपै छोड देवै ॥

ततः ॐ अपहताऽअसुरारक्षाꣳसिवेदिषदः। इत्यासनोपरितिलान्विकीर्य (आयन्तुनइतिमंत्रंजपेत् न वा) ततःअर्घपात्रोपरिपवि-

त्रं धृत्वातत्रॐशन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये। शंयोरभिस्रवन्तुनइतिजलंप्रक्षिप्य ॐतिलोसिसोमदैवत्योगोसवोदेवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिःपृक्तःस्वधयापितॄँल्लोकान्प्रीणाहि नः। इतितिलान्तूष्णीमेवगन्धपुष्पेनिक्षिपेत् ततोर्घपात्रसंपत्तिरस्तुइतिपठित्वाअर्घपात्रं वामहस्तेकृत्वा तत्रस्थंपवित्रंपितृपात्रेधृत्वाकिञ्चिदुदकंचदत्त्वा ॐयादिव्याआपःपयसासंबभूवुर्य्याआन्तरिक्षाउतपार्थिवीर्य्याः।हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानऽआपःशिवाःशꣳस्योनाःसुहवाभवन्तु इतिमंत्रेणाभिमंत्र्य द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रअस्मत्पितरमुकशर्मन् एषतेहस्तार्घःस्वधा नमः। इतिदक्षिणकरेपितृतीर्थेनयथाजलंपतितथापवित्रोपरिसावशेषमर्घंदद्यात् । अर्घपात्रंचपुरतःस्थापयेत् ।

भाषाभावार्थ—आसन देनेके अनन्तर (अपहता) इस मन्त्रसे आसनपै तिल गेरै और (आयंतुनः) इस मन्त्रको पढ़ै या नहीं पढ़ै, कारण एकोद्दिष्टमें आवाहनमन्त्रका त्याग होनेसे पश्चात् अर्घपात्र रखके उसमें पवित्री अर्थात् प्रादेशमात्र दर्भाका दो पत्ता अग्रभाग सहित धरै और (शन्नोदेवी) इस मन्त्रको पढ़के जल घालै तथा (तिलोसि)इस मन्त्रसे तिल गेरै और मन्त्रके विनाही चन्दन पुष्प आदि घाल देवै ।(मन्त्रोंका अर्थ) (शन्नोदेवी) हे जलदेव ! आप (देवी) दीप्ति प्रकाश वाले हो सो (नः अस्माकं) हमारेको (अभीष्टये) संपूर्णकामनाकी पूर्तिके अर्थ (पानाय) पीनेके अर्थ (शं) सुखके अर्थ(भवन्तु) होओ और हमारे(शंयोः) कल्याणयोगसे (स्रवन्तु) गमन करो इति । (यादिव्या)इसका अर्थ (या) जो आप जल हैं सो(पयसा) उदक करके (संबभूवुः) उत्पन्न होते भये और (दिवि) स्वर्गमें (आन्तरिक्षां) आकाशमें (पार्थिवीः) पृथिवीके

विषे उत्पन्न भये हैं. कैसे वे जल हैं कि, (हिरण्यवर्णा) चांदीके वर्णवाले हैं अर्थात् स्वच्छ हैं और(यज्ञियाः) यज्ञ अनुष्ठानके योग्य हैं सो (नोऽस्माकं) हमारेको (शिवाः) कल्याण करनेवाले (शं)सुखके देनेवाला (स्योनाः)आनन्दके देनेलायक (सुहवा) ब्राह्मणके हाथमें अर्घ देने योग्य (भवन्तु)होवो । इति मन्त्रार्थः। पश्चात् अर्घपात्रको बायें हाथमें लेके पवित्री पत्तेपर स्थापन करै और (यादिव्या) इस मंत्रसे अर्घपात्रका जल मंत्र करके द्विगुणभुग्न अर्थात् मोटक तिल जल लेके पिताका गोत्र नाम उच्चारण करै और संकल्परीतिसे अर्घपात्रका जल दाहिने हाथकरके पितृतीर्थसे पवित्रीपै थोडा देदेवे और अर्घपात्र जलसहित अगाडी स्थापनकर देवै ॥

(ततःसव्येनॐआपः शिवाःशिवतमाःशांताः शांततमास्तास्तेकृण्वंतुभेषजमित्यभिषेकं कृत्वा)अपसव्येनॐपित्रेस्थानमसीतिमंत्रेणार्घपात्रमधोमुखंपितृवामपार्श्वेनिदध्यात् । एवं

स्थितमर्घपात्रं दक्षिणादानपर्यंतं न चालयेत्। ततोगंधपुष्पधूपदीपादिकंधृत्वा । द्विगुणभुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् एतानि गंधपुष्पधूपदीपतांबूलयज्ञोपवीतवासांसितुभ्यं स्वधा इति गंधादीन्युत्सृजेत् । ततः ॐ अर्चनसंपूर्णमस्त्वित्युक्त्वाभोजनपात्रस्थापनदेशंसंमार्ज्यपात्रं च दत्त्वागौरमृत्तिकयाजलेनवा आसनं वेष्टयित्वामंडलंकुर्यात् (अत्रपरकीयभूमिश्राद्धकरणपक्षेॐ इदमन्नंभूस्वामिपितृभ्यो नमः। इतिघृतादियुक्तमन्नं दद्यात् स्वसत्त्वेतुनदद्यात्) ततोभोजनपात्रे उष्णमन्नं सघृतमनेकव्यंजनयुतं सुशीतलजलसहितं यथावत् परिविष्य मधुनाभिघार्य्य ॥

भाषाभावार्थ—पश्चात् सव्य होके(आपःशिवाः) इसमंत्र करके अर्घपात्रके जलका शिरपै अभिषेक करै।

फिर अपसव्य आदि होके (पित्रेस्थानमसि) इसमंत्रसे अर्घपात्रको आसनके बाएँ तरफ नीचेको मुखकरके स्थापन करदेवै परंतु दक्षिणादान दिये पहले पात्रको उठावे नहीं। फिर गंध, पुष्प, धूप, दीप, नागरपान, सुपारी, यज्ञोपवीत, वस्त्र आदि पिताके आसनपै रखके मोटक तिल जल दहिने हाथमें लेवे और पिताका गोत्र नाम उच्चारण करके गंध पुष्प आदि पिताके अर्थ संकल्परीतिसे करदेवै और संकल्पका जल अगाडी त्यागन करै। फिर हाथ जोडके प्रार्थना करै और अगाडी पडाहुवा पुष्प तिल आदि दूर करके भोजन पात्र स्थापन करनेके अर्थ जलसे जगें धोवै और पात्र देके सुपेद बारीक मट्टीसे या जलसे आसनके बाहरकर मंडल करै, यह मंडल ब्राह्मणके चतुरस्र, क्षत्रियके त्रिकोण, वैश्यके गोल करना चाहिये और यदि दूसरेका मकान या जगे होवे तो मरे हुए भूस्वामिके अर्थ घृतयुक्त अन्नकी (इदमन्नं भूस्वामि)

इसमंत्रसे बलि देवै यदि जीवता होवे तो किराया दे-देवै और अपने घरमें श्राद्धकरनेवाला तथा तीर्थ क्षेत्र आदिमें यह बलि नहीं देवै। पश्चात् भोजनपात्रके विषे गरम अन्न घृत व्यंजन शाकसंहित परिवेषे और शीतलजलका पात्र पास रक्खै फिर अन्नपै सहत लगाकै

ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिंधवः । माध्वीर्न्नःसन्त्वौषधीः १ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः । मधुद्यौरस्तुनःपिता २ मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः । माध्वीर्गावोभवन्तुनः ३ ॐमधुमधुमध्वित्यभिमंत्रयेत् । ततअन्नपात्रंन्युब्जपाणिभ्यांव्यस्ताभ्यांस्पृष्ट्वा ॐपृथिवीतेपात्रंद्यौरपिधानंब्राह्मणस्यमुखेऽअमृतेऽअमृतंजुहोमिस्वधा इति पठित्वाॐइदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपाꣳसुरे ।इत्येतामृचंचजप्त्वास्वांगुष्ठमधोमुखमनखं ॐ विष्णोकव्यꣳरक्ष इति यजुषाऽन्नेनिवेश्य । इदमन्नम् । इमाआपः ।

इदमाज्यम् । एतत्सर्वंकव्यमितिपठित्वा ॐ अपहताऽअसुरारक्षा ꣳसिवेदिषदः। इति अन्न-पात्रपरितस्तिलान् विकीर्य्य ॥

भाषाभावार्थ–(मधुवाता) इत्यादि तीन मंत्रों-करके अभिमंत्रण करै (मंत्रोंका भावार्थ) (वाता) वायुदेवता (ऋतायते) यजमानके अर्थ (मधु) अमृतमयी बहो और (सिंधवः) गंगा यमुना आदि नदियां मधुवन करो (औषधी) यवधान्य आदि (नोऽस्माकं) हमारे मधुर होवो और (नक्तं) रात्रि (मधुयुक्ता) रसवाली होवो (उषसो) प्रातःकाल प्रकाश युक्त होवो (पार्थिवंरजः) पृथ्वीलोक माताके तुल्य पालनमें और (द्यौः) स्वर्ग लोक पिताकी माफिक होवो और (वनस्पतिः) पीपल बड़ आदि अथवा सोमदेवता रसको देनेवाली होवो (सूर्यः) सूर्यदेवता घाम ताप आदिसे रहित करो (गावः) सूर्यकी किरणें शीतल अर्थात् अमृतयुक्त होवो

और यह अन्न पिताके मधुसमान मीठा होवो (इति मंत्रार्थः) फिर अन्नपात्रको नीचेको मुखकिये हुए हाथोंसे स्पर्श करे और (पृथिवीते० इदंविष्णु०) यह दो मंत्र पढै फिर नीचेको मुखकिये हुये दाहिने हाथके अंगूठेको (विष्णोकव्यं) इस मंत्रसे अन्नपै लगावे और (इदमन्नं) इत्यादि पढ़के (अपहता) इसमंत्रकरके अन्नके बाहरकर तिलविकिरण करै (मंत्रोंका अर्थ)हे अन्न (ते) तुम्हारे पृथ्वीहै सो पात्रका आधार है अर्थात् पृथ्वी तो नीचेका पात्रहै और (द्यौरपिधानं) आकाश ऊपरका पात्रहै और (ब्राह्मणस्य मुखे)ब्राह्मणके मुखरूप (अमृते) शुद्ध अग्निके विषे (अमृतं) अमृतरूप तुमको (जुहोमि) होमताहूं सो सुहुत होवो (इदंविष्णु)इन तीनों लोकोंको भगवान् विष्णु वामनअवातारमें (विचक्रमे) मापता भया और (त्रेधा) तीन तरहसे पृथ्वी आकाश स्वर्गमें (पदं) चरणकमलको (निदधे) धरते भये और (अस्य) इस-

लोकके (पांसुरे) धूलिके विषे पैरको (समूढं) शान्त-करते भये इसवास्ते यहांसे राक्षसगण दूर होओ ॥ वामकरेणपात्रमत्यजन् दक्षिणकरेण द्विगुण-भुग्नकुशादीन्यादाय ॐअद्यामुकगोत्र अस्म-त्पितरमुकशर्मन् इदमन्नं कव्यं सोपस्करं परिविष्टममृतरूपं तुभ्यं स्वधा इत्युदकंपितृ-तीर्थेनपित्रासनवामभागेभूमौक्षिपेत् । ततः ॐअन्नहीनंक्रियाहीनं विधिहीनंचयद्भवेत् । तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु इति प्रार्थ्य सव्येन सव्याहृतिकां सप्रणवां गायत्रीं त्रिः सकृद्वा जपेत् । कृतांजलिर्दर्भेष्वासीनः ॐमधुवाता इति त्र्यृचंमधुमधुमध्वेति च जपेत् । ततः ॐ कृणुष्वपाजःप्रसितिन्नपृथ्वींय्याहिराजेवाम-वाँऽइभेन । तृष्वीमनुप्रसितिन्द्रूणानोस्ता-सिविध्यरक्षसस्तपिष्ठैः॥ १॥ तवभ्रमासऽआ-शुयापतन्त्यनुस्पृशधृषताशोशुचानः । तपूंषं

ष्यग्नेजुह्वापतंगानसंदितो विसृज विष्वगु-
ल्काः ॥२॥ प्रतिस्पशोविसृजतूर्णितमोभवा-
पायुर्विशोऽअस्याअदब्धः॥ योनोदूरेऽअघ-
शꣳसोयोऽअन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरादध-
र्षीत् ॥ ३ ॥ उदग्नेतिष्ठप्रत्यातनुष्वन्यमित्राँ
ऽओषतातिग्महेते।योनोऽअरातिꣳसमिधान-
चक्रे नीचातंधक्ष्यतसन्नशुष्कम् ॥४॥ ऊर्ध्वो
भवप्रतिविद्ध्याद्ध्यस्मदाविष्कृणुष्वदैव्या-
न्न्यग्ने। अवस्थिरातनुहियातुजूनांजामिम-
जामिम्प्रमृणीहिशत्रून्। अग्नेष्ट्वातेजसासा-
दयामि॥५॥इतिरक्षोघ्नीः पंचऋचःपठित्वा॥

भाषाभावार्थ—तिलविकिरणेके अनंतर बायेंहा-
थसे पात्रको नहीं छोडता हुआ दाहने हाथमें मोटक
तिल जल लेवै और पिताका गोत्र नाम उच्चारण करके
उपस्कर सहित गरम अन्न पिताके अर्थ करदेवै और
संकल्पका जल अन्नपात्रके पश्चिमकी तरफ पितृ-

तीर्थसे छोडदेवै। पश्चात् (अन्नहीनं) यह श्लोक पढके सव्यसे व्याहति ॐकारसहित तीनबेर गायत्री-का जप करै और दर्भोंमें बैठा हुवा (मधुवाता) इन तीन मंत्रोंको पढ़ै फिर (कृणुष्व पाजः) यह पंच रक्षोघ्नी मंत्र पढके पिताका स्मरण करै ॥

भूमौतिलान्विकीर्य पितरं चिंतयन् ॐ उदी-रतामवरइत्यादित्रयोदशपितृमंत्रान् ॐ सह-स्रशीर्षाइत्यादिपुरुषसूक्तम्। ॐ आशुःशि-शानोइत्याद्यप्रतिरथंचजपेत् ततः ॐसप्तव्या-धादशार्णेषुमृगाःकालंजरेगिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाःसरसिमानसे। तेभिजाताः कुरुक्षेत्रेब्राह्मणावेदपारगाः। प्रस्थितादूरम-ध्वानं यूयंतेभ्योऽवसीदथ। इतिहविःस्तोत्रं अन्यानिच सप्तार्चिरुचिस्तवप्रभृतीनि य-थाशक्तियथारुचि जपेत्। ततोऽपसव्येन उच्छिष्टसन्निधौ भूमिंप्रोक्ष्य तत्रदक्षिणाग्रं कुशत्रयमास्तीर्य्य सर्वप्रकारमन्नंसव्यंजनमु-

द्धृत्यसतिलमेकीकृत्य ॐअग्निदग्धाश्चयेजी-
वायेऽप्यदग्धाःकुलेमम । भूमौदत्तेनतृप्यन्तु
तृप्तायान्तुपरांगतिम् । इतिमंत्रेणकुशोपरित-
दन्नंविकीर्य सव्येन आचम्य हरिंस्मृत्वा
पूर्ववत् गायत्रीं मधुवाताइतिऋचंमधुमधुम-
ध्वितिच जपेत् ॥ ततोऽपसव्येनउच्छिष्टस-
न्निधौचतुरस्रंदक्षिणप्लवंस्थानंनिर्मायतन्मध्ये
दर्भपिंजुलीमूलेॐअपहताऽअसुरारक्षाꣳसि
वेदिषद इतिवामान्वारब्धदक्षिणकरेणप्रादेश-
मात्रांरेखांदक्षिणाग्रांसमुल्लिख्य दर्भपिंजुली-
मुत्तरस्यांदिशिनिक्षिपेत् ॥

भाषाभावार्थ—फिर (उदीरता) इत्यादि तेरह मंत्र (सहस्रशीर्षा) इत्यादि सोलह मंत्र (आशुः शिशान) इत्यादि सत्रह मंत्रोंको पढै और(सप्तव्याधा) इत्यादि स्तोत्र और (अमूर्त्तानां) इत्यादि पितृस्तव रुचिस्तोत्र आदि शक्तिमाफिक पढै । फिर अन्नपात्रके समीप पृथ्वीको जलसे धोवे और तहां दक्षिणको अग्र-

भाग करके त्रिकुशा रक्खै पश्चात् (अग्निदग्धा) यह मंत्र पढके तिल व्यंजन जलसहित अन्न दर्भोंपै विकिरण करदेवै फिर सव्य होके हाथ धोवै आचमन करके विष्णुको स्मरण करै और पहलेकी तरह गायत्री, (मधुवाता) इत्यादि तीन मंत्र जपै । फिर अपसव्य आदि करके (चतुरस्र) चारकोणका दक्षिणको नीचे-ला वालु रेत या मट्टीसे स्थान(वेदि)बनवावै और उसके बीचमें दोपत्तेवाली दर्भा करके (अपहता) इसमन्त्रसे दक्षिणको अग्रभागवाली प्रादेशमात्र एक लकीर नि-काले और दर्भाको उत्तर दिशामें त्याग देवे (अपहता इस मन्त्रका अर्थ) (असुराः) दैत्यगण (रक्षा ꣳसि) राक्षसगण (वेदिषदः) श्राद्धयज्ञभूमिमें विघ्न करनेवाले (अपहताः) यहांसे दूर होवो । इति मंत्रार्थः ॥

ततः ॐ ये रूपाणिप्रतिमुंचमानाऽअसुराः सन्तःस्वधयाचरन्ति । परापुरोनिपुरोयेभर-न्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्त्वस्मात् ॥ इति

मन्त्रेणज्वलदुल्मुकं रेखोपरिभ्रामयित्वा दक्षिणतोनिदध्यात् तत उपमूलसकृल्लूनकुशत्रयं रेखोपरिआस्तीर्यसव्येनदेवताभ्य इति त्रिर्जपेत् । ततोऽपसव्येन सतिलजलपात्रंगृहीत्वा ॐअद्यामुकगोत्रअस्मत्पितरमुकशर्मन् अत्रावनेनिक्ष्वतेस्वधा इतिकुशोपरिअवनेजनं दद्यात् किंचिज्जलंपात्रे अवशेषयेत् । ततः सर्वस्मादन्नात्किंचित्किंचिदुद्धृत्यमध्वाज्यतिलसर्वव्यंजनयुतंपात्रेकृत्वाबिल्वोपमंपिंडं निर्मायमधुघृताभ्यामभिघार्य्य । द्विगुणमुग्रकुशत्रयादिसहितमादाय ॐ अद्यामुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् एतत्तेपिंडंस्वधा इति सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेनावनेजनस्थानेपिंडं दद्यात् । ततोलेपभागभुजस्तृप्यन्तु इति दर्भमूले करंप्रोञ्छ्य हस्तौप्रक्षाल्य सव्येनाचम्य हरिं स्मरेत् ॥

भाषाभावार्थ—लकीर निकालनेके अनन्तर (ये

रूपाणि) इस मंत्रको पढके जलता हुआ तृण रेखामें भरमाके दक्षिणको त्याग देवै (येरूपाणि इसका भावार्थ) (ये) जो (असुराः) दैत्यगण (रूपाणि) अपने निजरूपको (मुंचमानाः) त्यागते हुए और पितृसमान रूपको धारण करते हुए (स्वधया) पितरोंके अन्नकी इच्छा करके (चरंति) विचरतेहैं और (परापुरो) स्थूलशरीरको त्यागके सूक्ष्म शरीरको (भरंति) धारतेहैं सो (अग्निः)यह उल्मुकरूप अग्नि (अस्मात् लोकात्) इस पितृयज्ञस्थानसे उन दैत्योंको(प्रणुदात्)दूर करो । इति मंत्रार्थः।पश्चात् जड करके सहित अच्छीतरह छेदी हुई त्रिकुशा अर्थात् कुशाके तीन पत्ते रेखाके ऊपर स्थापन करके सव्य होके (देवताभ्यः)इस मंत्रको तीनबेर जपै । फिर अपसव्य आदि करके एक पात्रमें जल तिल चंदन घालै और दाहने हाथमें लेके पिताका गोत्र नाम उच्चारण करके दर्भाके ऊपर थोडा जल देदेवै फिर संपूर्ण-

श्राद्धके अन्नमेंसे थोडा थोडा गरम अन्न लेके एक-थालीमें रक्खै और उसमें सहत, घृत, तिल, व्यंजन आदि सारे पदार्थ मिलावै फिर उसका एक पिंड बिल्वके फलकी समान गोल बनाके सहत घृत करके लेप देवै पश्चात् पिंड और मोटक तिल जल आदि दाहिने हाथमें लेके पिताका गोत्र नाम उच्चारण करै और बाएँ हाथको दाहिने हाथसे स्पर्श करता हुवा दाहिने हाथके पितृतीर्थ करके अवनेजनस्थानमें दर्भोंके ऊपर पिंड स्थापन करदेवै, फिर (लेपभाग) इस मंत्रको पढके पिंडके समीप दर्भोंमें अपने दाहिने हाथको पोंछ देवे और जलसे धोके सव्यसे आचमन हरिस्मरण करै॥

ततोऽपसव्यंकृत्वा ॐअत्रपितर्मादयस्वयथा-भागमावृषायस्व इति पठित्वा वामावर्त्तेनो-दङ्मुखीभूय प्रीतमनाः श्वासंनियम्यतेनेव पथापरावृत्य ॐ अमीमदन्तपितर्यथाभाग-मावृषायिष्ट इति जपेत् ततःपूर्वदत्तावनेजन-

पात्रजलेन ॐअमुकगोत्राऽस्मत्पितरमुकशर्मन् अत्रप्रत्यवनेनिक्ष्वतेस्वधा इति पिंडोपरिप्रत्यवनेजनं दत्त्वा नीवीं विस्रंस्य सव्येनाचम्यअपसव्येन ॐनमस्तेपितारसायनमस्तेपितःशोषायनमस्तेपितर्जीवायनमस्तेपितःस्वधायैनमस्तेपितर्घोरायनमस्तेपितर्मन्यवेनमस्तेपितर्नमस्तेगृहान्नः पितर्दत्तसतस्तेपितर्देष्म इतिकृतांजलिःपठेत् । ततः ॐ एतत्तेपितर्वासःइतिपठित्वा पिंडोपरिसूत्रमूर्णादशां वा पंचाशद्वर्षोपरियजमानहृदयलोमानि वा दत्त्वा ॐअद्यामुकगोत्रपितरमुकशर्मन् एतत्तेवासःस्वधाइत्युत्सृजेत्। ततः पितरमुद्दिश्य तदीयपिंडेतूष्णीमेवगंधपुष्पधूपदीपतांबूलदक्षिणादीनि दत्त्वा पिंडशेषान्नं पिंडसमीपेविकिरेत् ॥

भाषाभावार्थ—फिर अपसव्य होके (अत्रपितर्मा) इस मन्त्रको पढै और बायेंतरफसे उत्तरको मुख किया

हुआ प्रसन्नमनसे मौन धारके श्वासको बन्द करै और पिताका ध्यान करता हुआ उसीतरह पीछे हटके (अमीमदन्त) इस मन्त्रसे पिंडमें श्वास छोड देवै । फिर पहले दिये हुए अवनेजनपात्रके जलका गोत्र नाम उच्चारण करके पिंडमें प्रत्यवनेजन देके नीवी-विस्रंसन अर्थात् कटिवस्त्रमें टंगे हुए तिलदर्भोंक-त्याग करैं और सव्य होके आचमन करै । फिर अपसव्य होके (नमस्तेपितः) इस मन्त्रकरके अंजलि किया हुआ प्रार्थना करै (मन्त्रका अर्थ) हे पितः (रसाय) रसवाली वसन्तरूप (ते तुभ्यं) तुम्हारे अर्थ (नमः) नमस्कार है और (शोषाय) ग्रीष्मरूपके अर्थ (जीवाय) वर्षाऋतुरूपके अर्थ तथा (स्वधायै) शरद्रूपके अर्थ और (घोराय) विशेष सरदीयुक्त हेमंतरूपके अर्थ (मन्यवे) क्रोधरूपी शिशिरऋतुरूपके अर्थ नमस्कार है अर्थात् इन ऋतुरूप आप हो सो आपके अर्थ नमस्कार करते हैं सो हे पितः। (नः अस्मभ्यं) हमारे अर्थ (गृहान्) स्त्री, पुत्र, पौत्र, धन, आदि (दत्त)

देवो और (वो युष्मभ्यं) आपके अर्थ (सतः) प्राप्त हुए धन आदिको हम (देष्मः) देतेरहैं और हमारा स्त्री,पुत्र,धन आदिका नाश कभी मत होवै (इतिमन्त्रार्थः) प्रार्थना करनेके अनंतर (एतत्तेपितर्वासः) इस मंत्रको पढके पिंडकेऊपर सूतके तागे या ऊनका तार अथवा पचास बरससे अधिक उमरवाले यजमानके छातीका सुपेद बाल धरै और संकल्प लेके पिताके अर्थ सूत्रका त्याग करै, फिर पिताके निमित्त लेके पिंडमें चंदन, पुष्प, तुलसी, धूप, दीप, तांबूल, दक्षिणा आदि अर्पण करै और पिंडका शेष बचा हुआ अन्न पिंडके समीप विकिरण करदेवै ॥

ततोभोजनपात्रेॐशिवाआपःसन्तु इतिजलं ॐसौमनस्यमस्तुइतिपुष्पाणि ॐअक्षतंचारिष्टमस्तुइतियवांश्चदद्यात् ॐअद्यामुकगोत्रस्यअस्मत्पितुरमुकशर्मणोदत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामितितिलयुक्तमक्षय्योदकंद-

द्यात्॥ततः प्राङ्मुखउपवीतीकृताञ्जलिराशि-
षोगृह्णीयात् ॐअघोरःपिताऽस्तु इति ततः
ॐगोत्रंनोवर्धतांदातारोनोऽभिवर्द्धतांवेदाःसं-
ततिरेवच । श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयंच-
नोऽस्तु ॥ अन्नंचनोबहुभवेदतिथींश्च लभे-
महि । याचितारश्चनःसंतु माचयाचिष्मकं-
चन॥एताःसत्याआशिषःसंतुइतिवदेत्ततोऽ
पव्यंकृत्वापिंडोपरिसपवित्रदर्भानास्तीर्यस्व-
धांवाचयिष्येॐ स्वधोच्यतामितिपठित्वा ॥

भाषाभावार्थ—पश्चात् अन्नपात्रमें (शिवाआपः) यह पढके जलदेवे और (सौमनस्यं)इससे पुष्प(अक्षतं चारिष्टं) इस मन्त्रसे यव जौ देवै परंतु चावल नहीं देवै । (इनका भावार्थ) ।(आपः) जलदेवता(शिवाः) कल्यण करनेवाले(सन्तु) होवो (सौमनस्यं) यह पुष्प चित्तको प्रसन्न रक्खो और(अक्षतं)यह यवधान्यहै सो (अरिष्टं)सन्तान उत्पन्न होनेवाले घरको देवो अर्थात्

सन्तान देनेवाला होवो (अरिष्टं सूतिकागृहमिति कोशात्) फिर मोटक, तिल,जल लेके षष्ठीविभक्ति-के द्वारा पिताका गोत्र नाम उच्चारण करके संकल्प-रीतिसे पिताके अर्थ अन्नजलकी अक्षय तृप्ति देवै, संकल्पका जल अन्नपात्रमें छोड देवै । फिर सव्य होके पूर्वको मुख किया हुआ अञ्जलि करके आशिष माँगे अर्थात् (अघोरः पिताऽस्तु गोत्रं नो वर्धतां) इत्यादि मंत्र पढै (मंत्रोंका भावार्थ) हमारा पिता (अघोर) सरलस्वभाववाला और प्रसन्नचित्तयुक्त होवो और हे पितः (नः अस्माकं) हमारे (गोत्रं)गोत्रको(वर्द्धतां) बढावो और हमारे कुलमें (दातारः)दान देनेवाले होवो तथा (वेदाः) वेदशास्त्रकी पठनपाठनसे उन्नति होवो (सन्ततिः) सन्तानकी वृद्धि होवो (श्रद्धा) देवपितृ-कार्योंसे भक्ति (माव्यगमत्) दूर मत होवो (बहुदेयं) बहुतसा धन द्रव्य और अन्न हमारे होवो (अतिथीन्) अभ्यागत भिक्षुक कँगले भिखारी आदि हमारे नित्यप्रति आओ और याचकोंकी याचना पूर्ण होवो परंतु(माच-

याचिष्यकंचन) हम किसीकी याचना करनेवाले न होवें और सम्पूर्ण आशिष परिपूर्ण होवो(इतिभावार्थः) । पश्चात् अपसव्य होके पिंडोंके ऊपर पवित्रीसहित दर्भ स्थापन करै और (स्वधां वाचयिष्ये) यह पढके ॥

ॐऊर्ज्जंवहंतीरमृंतघृतंपयः कीलालंपरिस्रुतं स्वधास्थतर्पयतमेपितरमितिमंत्रेणसपवित्रकुशोपरिदक्षिणाग्रांजलधारांदद्यात्ततःपिंडमुत्थाप्यस्थाल्यांनिधाय अवघ्राणंकृत्वापिंडाधस्तृतदर्भचोल्मुकमग्नौनिक्षिप्यअर्घपात्रमुत्तानीकृत्यययथाशक्तिरजतदक्षिणां दद्यात्। ॐअमुकगोत्रस्यास्मत्पितुरमुकशर्मणः कृतैतत्सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदंरजतंचन्द्रदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणेब्राह्मणायदक्षिणात्वेनदातुमहमुत्सृजेइतिदद्यात् । ततः ॐ अभिरम्यतामितिविसृज्यसव्येनॐदेवताभ्यः पितृभ्यश्चेतित्रिः पठित्वाअपसव्येनरक्षादी-

पंनिर्वापयेत्ततःसव्येनहस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य ॐ प्रमादात्कुर्वतांकर्म्मप्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेवतद्विष्णोःसंपूर्णस्यादितिश्रुतिरितिपठित्वाकर्मपूर्तिकामोविष्णुंस्मरेत् ॥

भाषाभावार्थ–(ऊर्जंवहंती) इस मंत्रसे पिंडपै दक्षिणाग्र जलधारा देवै ।(ऊर्जवहंती इस मंत्रका अर्थ) हे जलदेव (अमृतं) रोगके तथा मृत्युके नाश करनेवाला (कीलालं) बंधके छुटानेवाला आप हो सो (ऊर्जं स्वादु २ अन्नके रसको और घृतदुग्धको (परिस्रुतं) बहाते हुये पितृरूप हवि होके पिताकी तृप्ति करो(इति मन्त्रार्थः) । फिर पिंडको उठाके थालीमें रक्खै और सुगन्धि लेके पिंडके नीचेकी दर्भा तथा जलाया हुआ तृण अग्निके विषे गेरै और अर्घपात्रको सीधा करके शक्तिमूजब चांदीकी दक्षिणा प्रदान करै आर्थात् अमुकगोत्र अमुकनामवाले मेरे पिताके सांवत्सरिक निमित्तक एकोद्दिष्टश्राद्धकर्मकी पूर्तिके अर्थ यह रजत चांदी चन्द्रदैवता अमुकगोत्रनामयुक्त अमुक ब्राह्मणके

अर्थ दक्षिणाके निमित्त रखता हूं ऐसे कहके कोई ब्राह्मणको देदेवै । पश्चात् (अभिरम्यतां) इस मंत्र करके विसर्जन कर देवै अर्थात् श्राद्धकी समाप्ति करै फिर सव्य होके (देवताभ्यः) इस मंत्रको तीनबेर पछै और अपसव्य होके रक्षादीपकको शांत करै तथा हाथ पैर जलसे धोके सव्यसे तीन बेर आचमन करै, और कर्मपूर्तिके अर्थ (प्रमादात्) इत्यादि श्लोक पढ-के विष्णुका स्मरण करै ॥

ततःपिण्डंगामजं वायसान् वा खादयेत् अग्नौ जले वा क्षिपेत् ततोवैश्वदेवबलिकर्मणी कृत्वा श्राद्धद्रव्याणि ब्राह्मणायप्रतिपाद्ययथाशक्ति श्रोत्रियब्राह्मणान् भोजयेत्॥अथनैमित्तिकबलिदानमंत्राः।ॐसौरभेय्यःसर्वहिताःपवित्राः पुण्यराशयः । प्रतिगृह्णंतुमेग्रासंगावस्त्रैलोक्यमातरः॥इदमन्नंगोभ्योनमः ॥१॥ ॐऐंद्रवारुणवायव्याः सौम्यावैनैर्ऋतास्तथा । वायसाः प्रतिगृह्णंतु भूमावन्नंमयार्पितम् ॥ इदमन्नं

वायसेभ्योनमः ॥ २ ॥ ॐद्वौश्वानौश्याम-
शबलौवैवस्वतकुलोद्भवौ । ताभ्यामन्नंप्रय-
च्छामिस्यातामेतावहिंसकौ॥इदमन्नंश्वभ्यां
नमः ॥ ३॥ ॐहंततेअन्नमिदंमनुष्यायइतिहं
त्कारयुतंबलिंदद्यात् एवंबलिकर्मकृत्वा ॐ
यस्यस्मृत्याचनामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादि-
षु । न्यूनंसंपूर्णतांयातिसद्योवंदेतमच्युतमि-
तिपठित्वा अतिथिसुतभृत्यबांधवादिभिःस-
हभुंजीत एवमेव मातृपितृव्यभ्रात्रादिश्राद्धप्र-
योगः। मातृश्राद्धे अमुकगोत्राया अस्मन्मा-
तुरमुकदेव्याः सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धमहंक-
रिष्ये इतिसंकल्पं कुर्यात् ॐअमुकगोत्रेअ-
स्मन्मातरमुकदेवि इदमासनंतेस्वधा इत्याद्यु-
त्सर्गवावयंकर्त्तव्यम् ॥

इति श्रीबीकानेरराज्यान्तर्गतरत्नगढनगरनिवासिना पण्डितगौड-
श्री चतुर्थीलालशर्मणा विरचिते श्राद्धप्रकारो पद्धतिखंडे अनुक-
ल्पोनक्षयाहैकोद्दिष्टश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥

भाषाभावार्थ—फिर पिंडको गौ या बकरा,वृषभ, काग आदिको खिला देवै अथवा प्रज्वलित अग्निमें या अगाध तीर्थजलमें दक्षिणको मुख करके गेर देवै पश्चात् वैश्वदेव और, गौ आदिके अर्थ बलिप्रदान करके श्राद्धकी सामग्री ब्राह्मणोंको देवै और वेद पढेहुये उत्तमब्राह्मणोंको भोजन करावै, फिर 'यस्य स्मृत्या' इत्यादि पढके। अतिथि, पुत्र, पौत्र, भाई, बांधव, भृत्य, मित्र, शिष्य,स्त्रियोंसहित भोजन करै और सांवत्सरिकश्राद्धके दिन गरीब,भिक्षुक,दास,भिखारी आदि सबहीको देना चाहिये अर्थात् किसी मनुष्य माँगते हुयेको निराश नहीं जानेदेवै कारण शास्त्रका प्रमाणहै (क्षयाहे भूरिभोजनम्) इसीतरह माता,भाई,पितृव्य, आदिका श्राद्ध करना चाहिये और माताके श्राद्धमें अस्मन्मातुः।अस्मन्मातः। इत्यादिपदोंका उच्चारण करै॥

इति सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धपद्धतिः भाषाटीकासहिता समाप्ता॥

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ बी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स- ०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट.
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-६८७१०२५,
फैक्स -०२०-६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS